व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

***डॉ0 सरोज कुमार जायसवाल एवं **श्वेता तिवारी**

सहायक आचार्य (शिक्षा संकाय), प्रो0 एच0 एन0 मिश्रा कॉलेज ऑफ एजूकेशन, कानपुर (उ0प्र0)

शोध छात्रा, पी–एच0डी0(शिक्षा संकाय), छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर (उ0प्र0)

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र का शीर्षक ''व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन'' किया है। इस शोध पत्र में संवेगात्मक बुद्धि को परिभाषित करते हुए बताया गया है कि संवेगात्मक बुद्धि स्वयं एवं दूसरों की भावनाओं या संवेगों को समझने उनको व्यक्त करने और उनको नियंत्रित करने की योग्यता है। अपनी व दूसरों की भावनाओं को पहचानने की क्षमता, अलग–अलग भावनाओं में भेद व उन्हे संतुलित करना, सोच और मार्गदर्शन करने के लिए भावात्मक जानकारी के उपयोग को संवेगात्मक बुद्धि कहते हैं। इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य : व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना है। इस शोध पत्र की परिकल्पना : व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है कि जाँच वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के माध्यम से किया गया हैं। जिसके अन्तर्गत न्यादर्श का चुनाव कुल सम्पूर्ण समष्टि में 300 व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक विद्यार्थियों को अपने न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। निष्कर्ष के रूप में : व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

संकेत शब्द : *व्यावसायिक पाठ्यक्रम, गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रम, संवेगात्मक बुद्धि, छात्र एवं छात्राएं*

प्रस्तावना :–

आज का युग भौतिकवादी युग है, आज हर आदमी किसी न किसी लक्ष्य की प्राप्ति एवं इच्छा की पूर्ति को मूर्तरूप देने में लगा हुआ है और इसके लिए वह दिन–रात भाग दौड़ में व्यस्त है। अपनी इच्छा पूर्ति के लिए आज हर आदमी तनाव चिन्ता एवं कुण्ठा का सामना किसी न किसी रूप में कर रहा है। किसी को नौकरी की चिन्ता है तो किसी को बच्चे के भविष्य की चिन्ता, किसी को शादी की चिन्ता है तो किसी को धन मकान व गाड़ी की है, कोई भोजन प्राप्त करने के लिए संघर्षरत् है, तो किसी को ज्यादा या पौष्टिक भोजन ही मना है, जीवन में अनेकोनेक प्रकार के परिवर्तन होते रहते हैं। ऐसा लगता है जैसे चारों तरफ समस्याओं का अम्बार लगा हुआ है। ऐसी परिस्थितियाँ व्यक्ति के जीवन को कष्टप्रद बना रहीं और उनमें कई प्रकार की विकृतियाँ एवं अधिक तनाव उत्पन्न कर रहीं हैं जिसके कारण वह अपने समाज के साथ समायोजित नहीं कर पा रहे हैं और उसके सामने स्वास्थ्य सम्बन्धी जीवन की चुनौतियाँ भी खड़ी हो गयी हैं।प्रायः देखा गया है कि ऐसे व्यक्ति जिनके संवेगात्मक बुद्धि का स्तर उच्च है वह अपनी समस्याओं का समाधान निम्न संवेगात्मक बुद्धि रखने वाले व्यक्तियों की अपेक्षा सरल माध्यम से कर लेते हैं।

संवेगों और सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन सम्प्रत्यय है। मुख्यतः यही समझा जाता है कि व्यक्ति की सफलता और उपलब्धियां उसकी बुद्धि पर आधारित होती हैं जिनकी बुद्धि अधिक होती है उनकी उपलब्धियाँ भी अधिक होती है। आधुनिक शोधों से यह स्पष्ट होता है कि बुद्धिलब्धि का तो जीवन में मिलने वाली सफलताओं में केवल 20 प्रतिशत ही योगदान रहता है शेष 80 प्रतिशत

योगदान का श्रेय उसकी संवेगात्मक बुद्धि तथा उसके सामाजिक स्तर आदि को जाता है। अब प्रश्न यह उठता है कि सांवेगिक बुद्धि क्या है? सांवेगिक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति की उस समग्र क्षमता से है जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरों के संवेगों को जानने, समझने तथा उनका सर्वोत्तम प्रबन्धन करने में उसकी सहायता करती है। सांवेगिक बुद्धि के कारण ही व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में प्रभावी रूप से संवेगों की ऊर्जा तथा सूचना का प्रयोग करता है। व्यक्ति के विचार जो कि सांवेगिक और बौद्धिक होते है, शिक्षा उनकी पूर्ण अभिव्यक्ति में सहायक होती है। इसके द्वारा व्यक्ति अपने संवेगों पर नियंत्रण, सहानुभूति, स्वप्रबंधन सामाजिक जागरूकता, मानसिक तनाव नियंत्रण आदि सीखता है एवं इसके द्वारा उपयुक्त निर्णय लेकर प्रत्येक क्षेत्र में समायोजित होकर अच्छा प्रदर्शन करता है। अतः शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों को संवेगात्मक रूप से परिपक्व बनाकर उन्हें वातावरण में उचित समायोजित किया जा सकता है। मनुष्य का जीवन चुनौतियों एवं संघर्षों से परिपूर्ण हैं बचपन से ही हमें जीवन की विविध समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जो जिस सीमा तक जितने अच्छे ढंग से जीवन की इस लड़ाई को लड़ता जाता है वह उतने ही अच्छे रूप से सफलता प्राप्त करता है। हम अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के अतिरिक्त जीवन में बहुत कुछ हासिल करना चाहते है और उसके लिए निरन्तर संघर्ष करते है, परन्तु कई बार ऐसा होता है कि जो हम चाहते है जिसके लिए हम दिन–रात परिश्रम करते है। लेकिन उस उद्देश्य की प्राप्ति हमें नहीं होती। ऐसा ना होने की स्थिति में हमारे मन मस्तिष्क में हलचल उत्पन्न हो जाती है। इससे हमारे अन्दर शैक्षिक तनाव उत्पन्न हो जाती है। अकादमिक तनाव जीवन की हर अवस्थाओं में उत्पन्न होता है कभी थोड़े रूप में तो कभी ज्यादा। विद्यार्थी जीवन में तनाव की मात्रा अधिक होती है। जिन विद्यार्थियों के जीवन में तनाव की मात्रा कम होगी उसकी शैक्षिक उपलब्धि एवं सफलता भी उतनी अच्छी होगी और जिसमें तनाव की अधिकता रहेगी उनकी शैक्षिक उपलब्धियों के परिणामों में निम्नता होगी अर्थात् अच्छी उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों को सांवेगिक बुद्धि से ही अच्छा होना आवश्यक है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक शिक्षा विद्यार्थियों की सामान्य दक्षता बढाने तथा कार्य के प्रति रचनात्मक रूचि उत्पन्न करने का दृष्टिकोण प्रदान करती है यह उनमें उधमिता की भावना का भी विकास करती है। जीवन को सुखद एवं समृद्व बनाने के लिए तथा आर्थिक स्थिति सुदृढ करने में यह प्रमुख भूमिका निभाती है। व्यावसायिक शिक्षा विद्यार्थियों को आर्थिक समृद्वि की ओर ले जाने हेतु मार्गदर्शक का कार्य करती है। व्यावसायिक शिक्षा के उपरान्त विद्यार्थी इस योग्य हो जाते हैं कि वे अपनी नैसर्गिक अभिरूचि के किसी भी व्यवसाय को कुशलता के साथ कर सकते हैं। विद्यार्थियों के मध्य तनाव, आक्रामक व्यवहार एवं उनका सामाजिक रूप से असंवेदनशील होना भविष्य के लिए और आज के लिए एक विकराल समस्या उत्पन्न कर रहा है। इस सम्बन्ध में हम सिर्फ हाथ पर हाथ रखकर ये सब नहीं देख सकते। हमें मिलकर इस ओर विचार करने की आवश्यकता है जब तक विद्यार्थी अपनी आंतरिक तथा बाह्म योग्यताओं एवं क्षमताओं से पूर्ण परिचित नहीं होता है तब तक वह असफलता का सामना करता रहता है और इसका परिणाम यह होता है कि उनका परिश्रम, समय एवं ऊर्जा व्यर्थ हो जाती है और अंततः वे निराश हो जाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रम स्तर पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना अपेक्षाकृत अधिक उपयुक्त एवं अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होता है।

प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नवत् उद्देश्य हैं–

1. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
2. गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना :–

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

1. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन की परिसीमा :

प्रस्तुत शोधकार्य में परिसीमांकन के रूप में उत्तर प्रदेश राज्य के कानपुर मण्डल के विभिन्न व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् महाविद्यालयों के छात्र–छात्राएं को अध्ययन हेतु सम्मिलित किया है।

सम्बन्धित साहित्य –

पूनिया, सैंगवान (2010) ने विद्यालयी बच्चों की भावात्मक बुद्धिमत्ता तथा सामाजिक अनुकूलन पर अध्ययन किया। अध्ययन में पाया कि बालकों की बुद्धिमत्ता व समायोजन क्षमता पर उनकी जाति, आय, पालकों के व्यवसाय आदि का प्रभाव पड़ता है। जिरॉक (2015) ने भावात्मक बुद्धि तथा सृजनात्मक चिंतन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन शैक्षणिक उपलब्धि के साथ किया। अध्ययन में पाया गया कि भावात्मक बुद्धि तथा शैक्षणिक योग्यता में सार्थक सम्बन्ध नहीं है। अरोरा (2016) ने किशोरों की सृजनात्मकता तथा भावात्मक बुद्धि के मध्य सम्बन्ध पर अध्ययन किया। परिणाम यह प्राप्त हुआ कि भावात्मक बुद्धि तथा सृजनात्मकता के मध्य मजबूत धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। **सिंह, विमल (2015)** ने स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन किया। निष्कर्ष के रूप से पाया कि स्नातक स्तर के सर्वाधिक 30 प्रतिषत विद्यार्थियों ने संतोषजनक समायोजन श्रेणी प्राप्त की तथा सबसे कम 13 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे रहे जिनकी समायोजन क्षमता उत्कृष्ट श्रेणी की पायी गयी। **त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं सिंह, जय (2016)** ने ''रीवा संभाग में हाईस्कूल में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं के संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' पर शोध किया। अध्ययन में पाया गया कि विद्यार्थियों की उपलब्धि परीक्षण पर उनकी सांवेगिक बुद्धि का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। **रानी, एस0 (2016)** ने ''विद्यार्थियों की बुद्धि, सांवेगिक बुद्धि, लिंग का शैक्षिक उपलब्धि के निर्धारण में भूमिका पर अध्ययन'' किया। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकल कर आया कि छात्राएं, छात्रों की तुलना में अधिक शैक्षिक उपलब्धि प्रदर्शित करती हैं। **पुरोहित विश्वामित्र और पटेल डॉ0 ईश्वर (2022)** राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसवेको और गैर स्वयंसेवक किशोर विद्यार्थियों के बीच भावात्मक बुद्धि का अध्ययन में यह पाया कि राष्ट्रीय सेवा योजना के सहभागी बालकों और असहभागी बालकों की तुलना में बेहतर भावात्मक बुद्धिमत्ता होती है। **ऋचा चौहान, डॉ. कुलदीप (2022)** स्नातक स्तर के विद्यार्थियो की भावनात्मक बुद्धि पर उनके एकल, संयुक्त परिवार का, उनकी आयु के सन्दर्भ में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन में यह पाया गया है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की उनके एकल एवं संयुक्त परिवार का उनकी आयु पर सार्थक प्रभाव पडता हैं। **मंजू, डॉ. रेणु कंसल (2024)** ने हरियाणा राज्य के वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का वैज्ञानिक दृ ष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जागरूकता का पर्यावरणीय व्यवहार पर प्रभावों का अध्ययन में पाया कि विद्यार्थी पर्यावरणीय संकटों के वैज्ञानिक समाधान के लिए प्रतिबद्ध होते हैं और अपने व्यवहार में तर्कसंगत निर्णय लेते हैं।

शोध विधि :

वर्तमान अध्ययन की शोध विधि में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग उसके उद्देश्यों व विशेषताओं को ध्यान में रखकर किया गया है। शोध समस्या का विषय ''व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राएं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन''से सम्बन्धित है।

जीव संख्या व न्यादर्श :

प्रस्तुत शोधकार्य में जीव संख्या के रूप में उत्तर प्रदेश राज्य के कानपुर मण्डल के विभिन्न व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् महाविद्यालयों के छात्र–छात्राएं सम्मिलित है। तत्पश्चात शोधकर्त्री ने न्यादर्श के चयन हेतु महाविद्यालयों की सूची तैयार की। सूची निर्माण के पश्चात् शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श का चुनाव कुल सम्पूर्ण समष्टि से व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक अध्ययनरत् 150 छात्र एवं 150 छात्राओं (कुल 300) को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया है तथा उन्हे चुनने के लिए स्तरीकृत याद्वच्छिक प्रतिदर्शन विधि (Stratified Random Sampling Method) का प्रयोग किया गया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :

प्रस्तुत शोध पत्र में संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण –रूकईया जैनुद्दीन एवं अंजुम अहमद द्वारा निर्मित को चयनित किया गया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक मान का उपयोग किया है। तत्पश्चात् आंकड़ों का विश्लेषण कर व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष निकाले गये।

आंकड़ों की व्याख्या एवं विश्लेषण :–

परिकल्पना संख्या–01 ''व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' का सत्यापन।

तालिका सं0–01

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

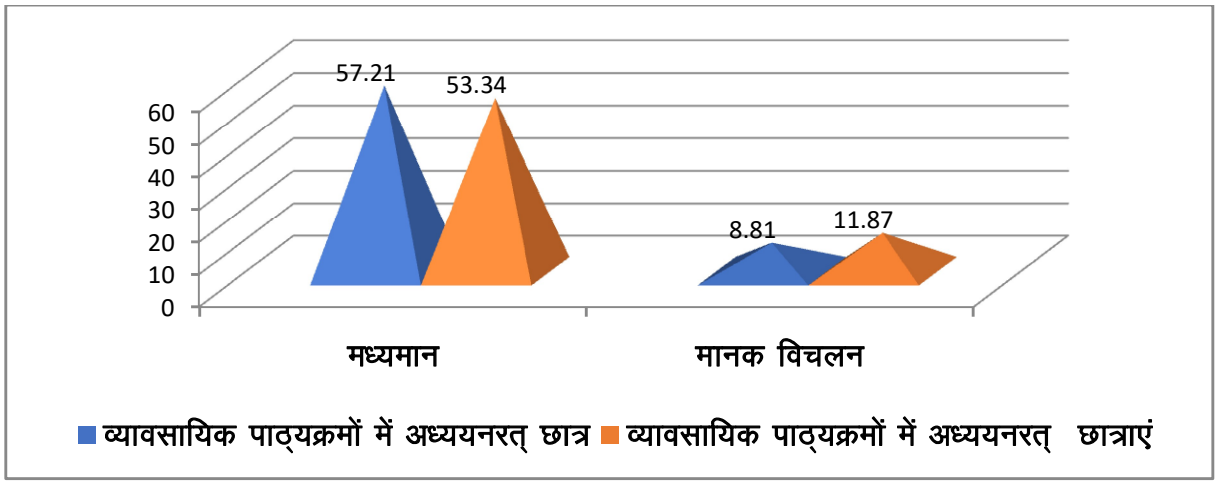
क्रम सं0	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र	75	57.21	8.81	1.20	3.22	0.01 स्तर पर सार्थक
02	व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राएं	75	53.34	11.87			

तालिका सं0–01 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान 57.21 तथा मानक विचलन 8.81 है। जबकि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान 53.34 तथा मानक विचलन 11.87 पाया गया। स्पष्ट है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि के

प्राप्तांकों का मध्यमान, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान से अधिक है। दोनों समूहों में प्राप्तांकों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए परिगणित क्रान्तिक मान 3.22 है जो कि स्वतंत्राश 148 के लिए 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया है। अतः इससे सम्बन्धित शून्य परिकल्पना–"व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' को अस्वीकृत किया जाता है। कहा जा सकता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया है। दोनों समूह के मध्यमानों में जो अन्तर परिलक्षित हो रहा है वह केवल न्यादर्श त्रुटि के कारण हो सकता है। दोनों समूहों में अन्तर होने का कारण व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में आयु के साथ–साथ व्यक्ति में परिपक्वता में भी वृद्धि एवं अन्तर दृष्टिकोणित होती है। दोनों समूहों के विद्यार्थी वयस्क तथा परिपक्व होने के साथ–साथ उनकी संवेगात्मक बुद्धि उनकी आयु, शिक्षा एवं लिंग भेद आदि में विभिन्न हो सकती है।

आरेख सं0 –01

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक आरेखीय प्रदर्शन



आरेख सं0–01 के अवलोकन से भी ज्ञात होता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान 57.21 तथा मानक विचलन 8.81 है। जबकि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान 53.34 तथा मानक विचलन 11.87 पाया गया।

परिकल्पना संख्या–02 "गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' का सत्यापन।

तालिका सं0–02

गैरव्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

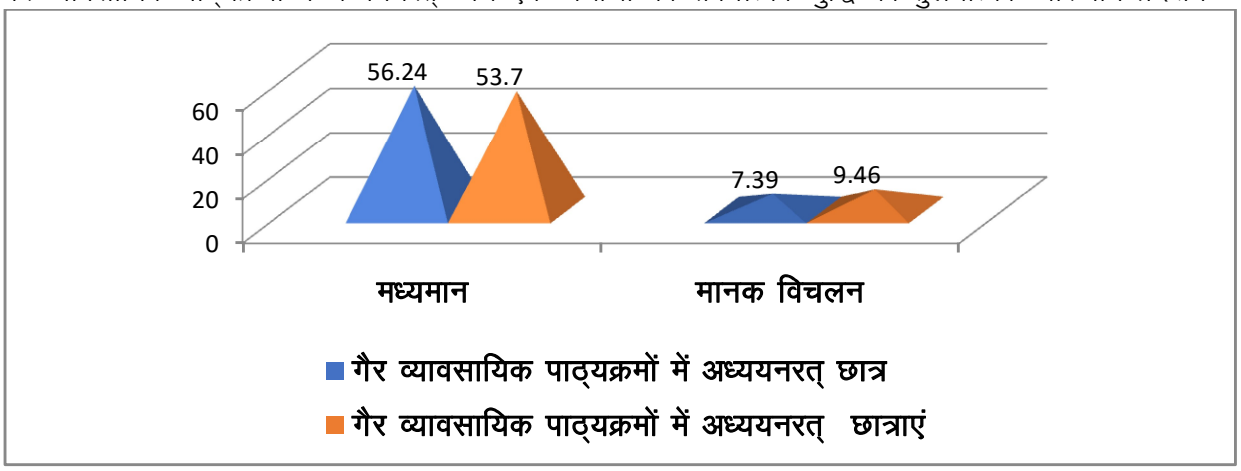
क्रम सं0	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र	75	56.24	7.39	1.38	1.84	असार्थक

02	गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राएं	75	53.70	9.46			

तालिका सं0–02 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान 56.24 तथा मानक विचलन 7.39 है। जबकि गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान 53.70 तथा मानक विचलन 9.46 पाया गया। स्पष्ट है कि गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान, गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान से अधिक है। दोनों समूहों में प्राप्तांकों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए परिगणित क्रान्तिक मान 1.84 है जो कि स्वतंत्राश 148 के लिए किसी भी स्तर पर असार्थक पाया गया है। अतः इससे सम्बन्धित शून्य परिकल्पना–''गैरव्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' को स्वीकृत किया जाता हैअतः कहा जा सकता है कि गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में किसी स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। दोनों समूह के मध्यमानों में जो अन्तर परिलक्षित हो रहा है वह केवल न्यादर्श त्रुटि के कारण हो सकता है। दोनों समूहों में अन्तर न होने का कारण गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में वयस्कता एवं परिपक्वता होने के कारण दोनों समूहों के छात्राओं में आयु, शिक्षा स्तर व लिंग भेद पर समान संख्या से संवेगात्मक बुद्धि पर समानता हो सकती है।

आरेख सं0 – 02

गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक आरेखीय प्रदर्शन



आरेख सं0–02 के अवलोकन से भी ज्ञात होता है कि गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान 56.24 तथा मानक विचलन 7.39 है। जबकि गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान 53.70 तथा मानक विचलन 9.46 पाया गया।

परिणाम :

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया है। दोनों समूह के मध्यमानों में जो अन्तर परिलक्षित हो रहा है वह केवल न्यादर्श त्रुटि के कारण हो सकता है। दोनों समूहों में अन्तर होने का कारण व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में आयु के साथ–साथ व्यक्ति में परिपक्वता में भी वृद्धि एवं अन्तर दृष्टिकोणित होती है। दोनों समूहों के विद्यार्थी वयस्क तथा परिपक्व होने के साथ–साथ उनकी संवेगात्मक बुद्धि उनकी आयु,

शिक्षा एवं लिंग भेद आदि में विभिन्न हो सकती है। जब कि गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में किसी स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। दोनों समूह के मध्यमानों में जो अन्तर परिलक्षित हो रहा है वह केवल न्यादर्श त्रुटि के कारण हो सकता है तथा वयस्कता एवं परिपक्वता होने के कारण दोनों समूहों के छात्राओं में आयु, शिक्षा स्तर व लिंग भेद पर समान संख्या से संवेगात्मक बुद्धि पर समानता हो सकती है।

प्रस्तुत शोध का निष्कर्ष :

1. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।
2. गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ सूची :–

कपिल, एच. के. (2004). *अनुसंधान विधियाँ.* भार्गव भवन, पृष्ठ 159.

गैरिट, एच. ई. (1989). *शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी.* कल्याणी पब्लिशर्स.

पाण्डेय, के. पी. (1998). *शैक्षिक अनुसंधान.* विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृष्ठ 17.

रानी, एस. (2016). उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि लिंग, बुद्धि, सांवेगिक बुद्धि के अंतःक्रिया का प्रभाव. *शोध दर्पण, 1*(4), 58–60.

पूनिया, ए. (2010). विद्यालयी बच्चों की भावात्मक बुद्धिमत्ता तथा सामाजिक अनुकूलन पर अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिपिनरी एजूकेशन एण्ड रिसर्च, 1*(9), 5–7.

मंजू, एवं कंसल, आर. (2021). ने हरियाणा राज्य के वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक जागरूकता का पर्यावरणीय व्यवहार पर प्रभावों का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एपलाइड रिसर्च, 10*(3), 45–47.

चौहान, आर., एवं कुलदीप (2022). उच्च माध्यमिक स्तर के विद्ययार्थियो की संवेगात्मक बुद्धि पर उनके एकल एवं संयुक्त परिवार का, उनकी आयु के सन्दर्भ में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एपलाइड रिसर्च, 8*(6),120–122.

त्रिपाठी, एम. के., एवं सिंह, जे. (2016). रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिपिनरी एजूकेशन एण्ड रिसर्च, 1*(9), 5–7.

पुरोहित, वी., एवं ईश्वर, एम. पी. (2022). ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ एचीवमेन्ट मोटिवेशन ऑफ एन. एस. एस. एण्ड नॉन एन. एस. एस. वॉलेन्टियर. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन एण्ड रिव्यूस, 3*(8),1489–1491.